पाठ 58

1. बड़ी भीड़ यीशु के पीछे क्यों हो ली?

-क्योंकि वे और अधिक चमत्कारी चिन्ह देखना चाहते थे जो यीशु ने बीमारों पर किए थे।

2. जब यीशु ने लोगों को खाना खिलाना शुरू किया, तो उसके पास कितनी रोटियाँ और कितनी मछलियाँ थीं?

-पांच रोटियां और दो मछलियां।

3. यीशु ने पाँच रोटियों और दो मछलियों से कितने लोगों को भोजन कराया?

-पांच हजार से ज्यादा लोग।

4. यीशु पाँच रोटियों और दो मछलियों से पाँच हज़ार से अधिक लोगों को कैसे खिला सकता था?

-क्योंकि यीशु परमेश्वर है।

-क्योंकि यीशु कुछ भी कर सकते हैं।

5. लोग यीशु को राजा क्यों बनाना चाहते थे?

-क्योंकि लोग चाहते थे कि यीशु उन्हें हर समय भोजन दें।

6. यीशु लोगों का राजा क्यों नहीं बनना चाहता था?

-क्योंकि यीशु जानता था कि लोगों के दिल बुरे हैं।

-क्योंकि यीशु जानता था कि लोग केवल यही चाहते हैं कि वह उन्हें भोजन दे।

7. यीशु उस मन्ना के समान कैसे है जो परमेश्वर ने इस्राएलियों को जंगल में दिया था?

-जैसे मन्ना स्वर्ग से आया, वैसे ही यीशु भी स्वर्ग से आया।

-जैसे मन्ना सिर्फ परमेश्वर ने दिया था, वैसे ही यीशु को भी परमेश्वर ने ही दिया था।

-जैसे इस्राएली मन्ना के बिना मर जाते, वैसे ही लोग भी यीशु के बिना मरेंगे।

-एक दिन, कुछ फरीसी और कानून के कुछ शिक्षक यीशु से मिलने आए।

आइए पढ़ें मरकुस 7:1-5

1-फरीसी और व्यवस्था के कुछ शिक्षक जो यरूशलेम से आए थे, यीशु के पास इकट्ठे हुए।

2-उसके कुछ शिष्यों को हाथ से खाना खाते देखा जो "अशुद्ध" थे, यानी बिना धोए।

3-(फरीसी और सभी यहूदी तब तक नहीं खाते जब तक कि वे अपने हाथों को औपचारिक रूप से नहीं धोते, बड़ों की परंपरा को मानते हुए।

4-जब वे बाजार से आते हैं, तब तक नहीं खाते जब तक कि वे धो न दें। और वे कई अन्य परंपराओं का पालन करते हैं, जैसे कि कप, घड़े और केतली की धुलाई।)

5-तब फरीसियों और धर्मशास्त्रियों ने यीशु से पूछा, "तेरे चेले प्राचीनों की रीति के अनुसार अशुद्ध हाथों से भोजन करने के स्थान पर क्यों नहीं रहते?"

-फरीसी और कानून के शिक्षक यीशु के चेलों से क्यों नाराज़ थे?

-क्योंकि यीशु के चेले बड़ों की परंपराओं को नहीं रखते थे।

-बड़ों की परंपराएं क्या थीं?

-वे कानून थे जो फरीसियों ने बनाए थे जो उन्होंने कहा था कि लोगों को परमेश्वर द्वारा स्वीकार किए जाने के लिए पालन करना चाहिए।

-क्या परमेश्वर हमें उन परंपराओं के अनुसार स्वीकार करते हैं जिन्हें हम रखते हैं?

-नहीं।

-चूंकि फरीसियों ने उन सभी परंपराओं का पालन किया जो उन्होंने बनाईं, उनका मानना था कि परमेश्वर ने उन्हें मंजूरी दी।

-हालांकि फरीसियों ने सभी परंपराओं का पालन किया, लेकिन उनके दिल बुरे थे।

-क्या परंपराओं को निभाने से हमारा दिल साफ हो जाएगा?

-नहीं।

-हालांकि फरीसी सभी परंपराओं को बाहर से रखते थे, लेकिन उनके दिल अंदर से बहुत बुरे थे।

-अगर आपके बर्तन में चिकन खाद अंदर की तरफ है, तो क्या यह बर्तन के बाहर की सफाई में मदद करेगा?

-नहीं।

-यीशु ने फरीसियों से क्या कहा?

आइए पढ़ें मरकुस 7:6

6-यीशु ने उत्तर दिया, “यशायाह ने तुम कपटियों के विषय में जो भविष्यवाणी की थी, वह ठीक ही था; जैसा लिखा है, कि ये लोग होठों से तो मेरा आदर करते हैं, परन्तु उनका मन मुझ से दूर रहता है।'”

-यीशु ने फरीसियों को पाखंडी कहा।

-पाखंडी क्या है?

-एक पाखंडी वह होता है जिसके शब्द और कर्म समान नहीं होते, बल्कि पूरी तरह से भिन्न होते हैं।

-यिशु ने यह भी कहा कि भविष्यवक्ता यशायाह ने उनके बारे में जो कुछ परमेश्वर की बाइबल में लिखा था वह सच था।

-भविष्यवक्ता यशायाह ने इन लोगों के बारे में क्या कहा?

-भविष्यवक्ता यशायाह ने कहा कि ये लोग अपने होठों से कहते हैं कि वे ईश्वर में विश्वास करते हैं, लेकिन उनका दिल ईश्वर से दूर है।

-भविष्यद्वक्ता यशायाह ने कहा कि वे अपने वचनों से परमेश्वर पर विश्वास करते हैं, परन्तु अपने हृदय से नहीं।

-क्या परमेश्वर उन्हें स्वीकार करते हैं जो केवल उनकी बातों से विश्वास करते हैं?

-नहीं।

-यीशु ने फरीसियों से और क्या कहा?

आइए पढ़ें मरकुस 7:7-9

7-यीशु ने कहा, "'वे व्यर्थ मेरी उपासना करते हैं; उनकी शिक्षाएं केवल पुरुषों द्वारा सिखाए गए नियम हैं।'

8-तू ने परमेश्वर की आज्ञाओं को छोड़ दिया है और मनुष्यों की परंपराओं को पकड़े हुए हैं।"

9-उसने उनसे कहा, "तुम्हारे पास अपनी परम्पराओं को मानने के लिए परमेश्वर की आज्ञाओं को टालने का एक अच्छा तरीका है!"

-यिशु ने कहा कि फरीसियों ने व्यर्थ में परमेश्वर की पूजा की।

-फरीसियों ने व्यर्थ में परमेश्वर की आराधना कैसे की?

-क्योंकि परमेश्वर उनकी पूजा को स्वीकार नहीं करेंगे।

-परमेश्वर फरीसियों की पूजा को क्यों स्वीकार नहीं करेगा?

-क्योंकि उनकी पूजा केवल उनके होठों से होती थी, उनके दिलों से नहीं।

-क्योंकि उनकी पूजा केवल उनके मांस से होती थी, उनके दिलों से नहीं।

-फरीसी अपनी परंपराएं बनाकर क्या कर रहे थे?

-फरीसी परमेश्वर की आज्ञाओं को तोड़ रहे थे।

-क्या परमेश्वर चाहता है कि लोग अपनी परंपराओं को उसकी बाइबल में जोड़ें?

-नहीं।

-परमेश्वर ने बाइबल में जो कुछ कहा है, उसमें हमें कभी भी कुछ जोड़ना या घटाना नहीं चाहिए।

-यीशु के फरीसियों से यह कहने के बाद, यीशु ने भीड़ को अपने पास बुलाया।

आइए पढ़ें मरकुस 7:14-15 और 17-19

14-यीशु ने फिर भीड़ को अपने पास बुलाकर कहा, “हे सब मेरी बात सुनो और इस बात को समझो।

15-मनुष्य के भीतर जाने से बाहर की कोई वस्तु उसे 'अशुद्ध' नहीं कर सकती। बल्कि मनुष्य से जो निकलता है, वह उसे 'अशुद्ध' बनाता है।

17-जब यीशु भीड़ को छोड़कर घर में गया, तो उसके चेलों ने उससे इस दृष्टान्त के बारे में पूछा।

18-"क्या तुम इतने सुस्त हो?" उसने पूछा। "क्या तुम नहीं देखते कि कोई भी वस्तु जो मनुष्य में बाहर से प्रवेश करती है, वह उसे 'अशुद्ध' नहीं कर सकती?

19-क्योंकि वह उसके हृदय में नहीं, बरन उसके पेट में और फिर उसके शरीर में से निकल जाती है।” (यह कहते हुए, यीशु ने सभी खाद्य पदार्थों को "शुद्ध" घोषित किया।)

-यीशु ने भीड़ से क्या कहा?

-यीशु ने कहा कि कोई भी चीज़ जो मनुष्य में बाहर से प्रवेश करती है, वह उसे 'अशुद्ध' नहीं कर सकती।

-यीशु का क्या मतलब था?

-यिशु का मतलब था कि लोग अशुद्ध हाथों से या अशुद्ध भोजन से अशुद्ध नहीं होते।

-मनुष्य अशुद्ध हाथों से या अशुद्ध भोजन से अशुद्ध क्यों नहीं होते?

-क्योंकि अशुद्ध हाथ और अशुद्ध भोजन हृदय को स्पर्श नहीं करते।

-यिशु ने कहा कि हाथों की अशुद्धता और अशुद्ध भोजन पेट में प्रवेश करते हैं, और शरीर से बाहर निकल जाते हैं, लेकिन दिल को नहीं छूते।

-क्या हम जो खाते हैं वह हमें परमेश्वर को स्वीकार्य बनाता है?

-नहीं।

-क्या हम जो नहीं खाते वह हमें परमेश्वर को स्वीकार्य बनाता है?

-नहीं।

-क्या हम जो पहनते हैं वह हमें परमेश्वर को स्वीकार्य बनाता है?

-नहीं।

-क्या हम जो नहीं पहनते हैं वह हमें परमेश्वर को स्वीकार्य बनाता है?

-नहीं।

-यीशु ने और क्या कहा?

आइए पढ़ें मरकुस 7:20-23

20-यीशु ने आगे कहा: "मनुष्य में से जो निकलता है, वही उसे 'अशुद्ध' बनाता है।

21-क्योंकि भीतर से अर्थात् मनुष्यों के मन से बुरे विचार, व्यभिचार, चोरी, हत्या, व्यभिचार,

22-लोभ, द्वेष, छल, कुटिलता, डाह, निन्दा, अहंकार और मूर्खता।

23-ये सब विपत्तियाँ भीतर से आती हैं और मनुष्य को अशुद्ध बनाती हैं।

-यीशु ने ऐसा क्या कहा जो मनुष्य को अशुद्ध करता है?

-यिशु ने कहा कि जो भीतर है वह मनुष्य को अशुद्ध करता है।

-अंदर क्या है जो मनुष्य को अशुद्ध करता है?

-उसका हृदय।

-क्योंकि आदम और हव्वा ने अदन की वाटिका में पाप किया, उनके हृदय अशुद्ध हो गए।

-कैन और हाबिल अशुद्ध मन से पैदा हुए थे।

-अब्राहम, इसहाक और याकूब सब अशुद्ध मन से पैदा हुए थे।

-सभी इस्राएली अशुद्ध मन से पैदा हुए थे।

-सभी लोग अशुद्ध दिलों के साथ पैदा होते हैं।

-क्योंकि सभी लोग अशुद्ध हृदय के साथ पैदा होते हैं, अशुद्धता हमारे हृदय से निकलती है।

-क्या परमेश्वर हमारे दिलों में मौजूद बुराई को देखता है?

-हां।

-परमेश्वर देखता है कि हमारे सभी दिल बुराई से भरे हुए हैं।

-ऐसी कौन सी बुराइयाँ हैं जो हमारे हर एक के दिल के अंदर होती हैं?

-बुरे विचार, यौन अनैतिकता, चोरी, हत्या, व्यभिचार, लालच, द्वेष, छल, अशिष्टता, ईर्ष्या, बदनामी, अहंकार और मूर्खता।

-फिर, यीशु ने लोगों को एक दृष्टान्त बताया।

आइए पढ़ें लूका 18:9-12

9-जिन लोगों को अपनी धार्मिकता पर भरोसा था और जो दूसरों को तुच्छ समझते थे, उन्हें यीशु ने यह दृष्टान्त कहा:

10-“दो मनुष्य मन्दिर में प्रार्थना करने को गए, एक फरीसी और दूसरा चुंगी लेने वाला।

11-फरीसी खड़ा हुआ और अपने बारे में प्रार्थना की: 'परमेश्वर, मैं आपका धन्यवाद करता हूं कि मैं अन्य पुरुषों की तरह नहीं हूं - लुटेरे, कुकर्मी, व्यभिचारी - या यहां तक कि इस चुंगी लेने वाले की तरह भी नहीं।

12-मैं सप्ताह में दो बार उपवास करता हूँ और मुझे जो मिलता है उसका दसवां हिस्सा देता हूँ।'”

-उस दृष्टांत में जो यीशु ने बताया, वे दो लोग कौन थे जो प्रार्थना करने मंदिर गए थे?

-एक फरीसी था और दूसरा चुंगी लेने वाला।

-फरीसी ने अपने बारे में क्या सोचा?

-फरीसी ने सोचा कि उसका दिल साफ है।

-फरीसी ने क्यों सोचा कि उसका दिल साफ था?

-क्योंकि उन्होंने बड़ों की परंपराओं को निभाया।

-क्योंकि वह सप्ताह में दो बार उपवास करते हैं।

-क्योंकि उसने अपनी सारी कमाई का दसवां हिस्सा मंदिर को दिया।

-फरीसी को बहुत गर्व था।

-उसने सोचा कि वह एक अच्छा आदमी था।

-उसने सोचा कि उसने जो किया वह सब अच्छा था।

-उसने सोचा कि वह अन्य लोगों से बेहतर है।

-फरीसी को विश्वास नहीं था कि उसे उद्धारकर्ता की आवश्यकता है।

-चूगीं लेने वाले के बारे में क्या?

आइए पढ़ें लूका 18:13

13-यीशु ने कहा, “किन्तु चुंगी लेने वाला कुछ ही दूर खड़ा रहा। उसने स्वर्ग की ओर देखा भी नहीं, वरन अपनी छाती पीटकर कहा, 'हे परमेश्वर, पापी मुझ पर दया कर।'"

-कर संग्रहकर्ता ने अपने बारे में क्या सोचा?

-चुंगी लेने वाला जानता था कि उसका दिल अशुद्ध है।

-चुंगी लेने वाले को कैसे पता चला कि उसका दिल अशुद्ध है?

-क्योंकि वह जानता था कि उसके बुरे विचार उसके अशुद्ध हृदय से आए हैं।

-चुंगी लेने वाला जानता था कि वह पापी है, और उसने परमेश्वर के विरुद्ध पाप किया है।

-वह जानता था कि वह अपने अशुद्ध हृदय को नहीं बदल सकता।

-वह जानता था कि उसके पाप को मौत की सजा दी जानी चाहिए।

-चुंगी लेने वाले ने उसे बचाने के लिए परमेश्वर से गुहार लगाई।

-फिर यीशु ने क्या कहा?

आइए पढ़ें लूका 18:14

14-यीशु ने कहा, "मैं तुम से कहता हूं, कि यह मनुष्य दूसरे के बदले परमेश्वर के साम्हने धर्मी ठहरा हुआ घर चला गया। क्योंकि जो कोई अपने आप को बड़ा बनाता है, वह छोटा किया जाएगा, और जो अपने आप को छोटा बनाएगा, वह ऊंचा किया जाएगा।"

-क्या परमेश्वर ने फरीसी को स्वीकार किया?

-नहीं।

-परमेश्वर ने फरीसी को क्यों अस्वीकार किया?

-क्योंकि फरीसी ने विश्वास नहीं किया कि उसका मन अशुद्ध है।

-क्योंकि फरीसी ने विश्वास नहीं किया कि उसने परमेश्वर के विरुद्ध पाप किया है।

-क्या परमेश्वर ने कर संग्रहकर्ता को स्वीकार किया?

-हां।

-परमेश्वर ने कर संग्रहकर्ता को क्यों स्वीकार किया?

-क्योंकि चुंगी लेने वाला जानता था कि उसका दिल अशुद्ध है।

-क्योंकि चुंगी लेने वाला जानता था कि उसने परमेश्वर के विरुद्ध पाप किया है।

-क्योंकि चुंगी लेने वाले ने उसे बचाने के लिए परमेश्वर को पुकारा।

-दृष्टांत के अंत में यीशु ने क्या कहा?

-यिशु ने कहा कि जो कोई खुद को परमेश्वर के सामने विनम्र करता है, परमेश्वर उसे ऊपर उठाएंगे।

-लेकिन जो कोई खुद को परमेश्वर के सामने ऊंचा करेगा, परमेश्वर उसे दीन करेगा।